वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 131
ISBN 978-93-80353-04-3

जिन सहस्रनाम मंत्र

(सरस्वती नाम मंत्र, पूजा एवं व्रत विधि)

– रचयित्री –
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रचना रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

तृतीय संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
2200 प्रतियाँ	फरवरी 2010	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

आद्य मिताक्षर

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

जिनसहस्रनाम स्तोत्र में सन् 1952 से पहले घर से ही मेरी विशेष श्रद्धा थी। चैत्र वदी एकम् (सन् 1953) को मैंने महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ली थी। सन् 1955 में क्षुल्लिका वीरमती की अवस्था में मेरा चातुर्मास दक्षिण में म्हसवड़ ग्राम (सोलापुर) महा. में क्षुल्लिका श्री विशालमती जी के साथ हुआ था। एक दिन मंदिर में जिनेन्द्र प्रतिमा के समक्ष मैंने अपने व्याकरण के ज्ञान को सफल करने के लिए भगवज्जिनसेन विरचित सहस्रनाम स्तोत्र के एक-एक नाम में चतुर्थी विभक्ति लगाकर मंत्र बनाना प्रारंभ कर दिया, 1008 मंत्र पूरे करके भगवान के समक्ष मैंने उनका पाठ किया।

क्षुल्लिका विशालमती माताजी अतीव प्रसन्न हुईं और उन्होंने उसे पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करा दिया। उसमें सहस्रनाम स्तोत्र के संस्कृत के अर्घ्य दिये गये थे।

इसी चातुर्मास में क्षुल्लिका विशालमती माताजी के साथ कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर जाकर चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की सल्लेखना देखी थी पुनः 'गुरुणां गुरुः' आचार्यश्री की आज्ञानुसार ही मैं जयपुर आकर उन्हीं के प्रथम पट्टाधीश आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से वैशाख बदी दूज (सन् 1956) में माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' बन गई।

मुझे प्रसन्नता है कि मैंने अपनी जिस प्रथम लेखनी से जिनेन्द्रदेव के 1008 नाममंत्र लिखे थे, उन्हीं मंत्रों का ही यह प्रभाव है कि तब से लेकर आज तक मेरी लेखनी से छोटे-बड़े अनेकों ग्रंथ लिखे गये हैं, जिनमें से लगभग 250 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

इस पुस्तक में मेरे द्वारा रचित जिनसहस्रनाम की पूजा व व्रत विधि भी दी गई है पुनः सरस्वती स्तोत्र है। यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ से लिया गया है। इसमें अंग-पूर्वरूप श्रुतज्ञान से सरस्वती माता की रचना की गई है। इसके बाद सरस्वती के 108 नाम मंत्र भी दिये गये हैं, ये मंत्र मैंने दक्षिण में छपी एक पुस्तक से लिखे थे पुनः मेरे द्वारा रचित सरस्वती पूजा दी गई है। ''व्रततिथि निर्णय'' पुस्तक से श्रुतज्ञान पच्चीसी व्रत की विधि भी दी गई है।

जो इन 1008 जिन नाम मंत्रों को प्रतिदिन पढ़ेंगे, वे अपनी स्मरणशक्ति एवं प्रतिभाशक्ति की अतिशायी वृद्धि करके महान विद्वान् बनेंगे तथा अगले भव में पूर्ण श्रुतज्ञान प्राप्त कर परम्परा से 1008 नाम एवं लक्षणों के धारक, ऐसे तीर्थंकर पद को भी प्राप्त करने में समर्थ हो जावेंगे।

कहा भी है–

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते।
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।।

हे भगवन्! आपके अचिन्त्य महिमा वाले स्तोत्र की बात तो दूर ही रहे, आपका नाम भी तो संसारी प्राणियों को संसार के दुःखों से बचाने वाला है। देखो, ग्रीष्म ऋतु में सूर्य के ताप से संतप्त प्राणियों को कमल से युक्त सरोवर की हवा ही शीतलता प्रदान करने वाली हो जाती है।

आप सभी भक्तगण 1008 मंत्रों को पढ़ते हुए ताजे पुष्प, लवंग या पीले चावल चढ़ावें, तो महान पुण्य का बंध करेंगे। यदि लघु सहस्रनाम विधान करना चाहें, तो इस पुस्तक से सर्वप्रथम सहस्रनाम पूजा करें पुनः प्रत्येक मंत्र को ''ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा'' इस प्रकार पढ़ते हुए मंडल पर बादाम, नारियल आदि कुछ भी चढ़ाते हुए 1008 मंत्रों से अर्घ्य चढ़ावें, इसके बाद जयमाला पढ़ें तो आपको लघु सहस्रनाम विधान करने का पुण्यफल प्राप्त हो जायेगा। अथवा इन मंत्रों को बिना कुछ चढ़ाए भी पढ़ सकते हैं।

इसी प्रकार से जो सरस्वती के भी 108 मंत्रों का पाठ करेंगे, वे सरस्वती देवी की कृपा प्रसाद से सम्यग्ज्ञान को प्राप्त कर काव्य आदि रचना करने में भी कुशल हो जावेंगे।

कहा भी है–

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चलभावेन, पूजनीया सरस्वती।।

सरस्वती माता के प्रसाद से मनुष्य काव्य करने में भी सक्षम हो जाते हैं, इसलिए निश्चल भाव से सरस्वती की पूजा करनी चाहिए।

इन सहस्रनाम व्रत व ज्ञान पचीसी व्रत को भी अपनी शक्ति के अनुसार करके अपनी आत्मा को भगवान परमात्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। इस पुस्तक से सभी भव्यजीव अपने ज्ञान और ध्यान की उत्तरोत्तर वृद्धि करें, यही मेरी मंगल कामना है।

छोटा सा बीज महान वटवृक्ष बन गया

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

किसी भी पेड़-पौधे का बीज तो छोटा ही होता है किन्तु उसे उत्तम भूमि में योग्य समय पर बो दिया जाता है, तो वह कालांतर में विपुल फल प्रदान करता है। ठीक यही स्थिति पूज्य ज्ञानमती माताजी की रही है। उन्होंने दीक्षा धारण करने के तीन वर्ष उपरान्त अल्पवय होते हुए भी भगवान जिनेन्द्र की भक्ति से ओत-प्रोत होकर एक वर्ष पूर्व ही पढ़ी हुई कातंत्र व्याकरण के ज्ञान के सदुपयोगस्वरूप भगवान के 1008 नामों को मंत्रों का स्वरूप प्रदान किया।

बस! यहीं से लेखनी प्रारंभ हुई। साहित्य सृजन का यहीं से बीजारोपण हुआ। बीज जब बोया जाता है, तब पहले तो पृथ्वी में समाविष्ट होकर बाह्य जगत से अपने अस्तित्व तक को खो देता है, किन्तु कालांतर में पुष्पित-पल्लवित होकर अनेकों फलों के रूप में प्रगट होता है। तब पुनः उसका स्वरूप बाह्य जगत में दृष्टिमान होता है। प्रस्तुत पुस्तक भी बीज की तरह भले ही लघुकाय है, किन्तु इसके पश्चात् लिखे गये छोटे-बड़े अनेकों ग्रंथों में से लगभग 250 ग्रंथ लाखों की संख्या में अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

जिस प्रकार से नींव का पत्थर तो हमेशा नीचे रहकर भवन को मजबूती से टिकाए रखता है, उसकी स्थिति को मजबूत बनाये रखता है, उसी प्रकार से यह कृति भी नींव के पत्थर की तरह साहित्य के भवन को सुरक्षित रखे हुए है। यदि नींव मजबूत है, तो उस पर कितनी भी मंजिल का मकान खड़ा किया जा सकता है।

भगवान का नाम लेने मात्र से ही अनन्त पापों का क्षण मात्र में क्षय हो जाता है इसलिए पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम भगवान के नामों को लिखकर ऐतिहासिक कार्य का श्रीगणेश किया।

दिगम्बर परम्परा में अब तक जितने भी ग्रंथ लिखे गये हैं, वे सब पुरुषवर्ग की ओर से ही लिखे गये–मुनियों ने लिखे, आचार्यों ने लिखे एवं पण्डितों ने लिखे, किन्तु महिलावर्ग–किन्हीं आर्यिका या श्राविका द्वारा लिखा हुआ कोई ग्रंथ भारतवर्ष के किसी भी ग्रंथ भंडार में उपलब्ध नहीं था।

इस कमी की पूर्ति सर्वप्रथम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने की। प्रस्तुत पुस्तक इस शृँखला की प्रथम कड़ी है। ग्रंथों की एक-एक कड़ी जुड़कर वृहत् ग्रंथमाला तैयार हो गई है। जो महानुभाव इस माला को धारण करेंगे, इनका अध्ययन, पठन-पाठन करेंगे, वे चिदानन्द-चैतन्य सुख को प्राप्त करेंगे।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ(निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसीमंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली नई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॅट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

जिनसहस्रनाम मंत्र

मंगलाचरण

–दोहा–

श्री जिनवर के नाम हैं, एक हजार सुआठ।
ज्ञानकली विकसित करे, नाम मंत्र का पाठ[1]।।1।।

(1)

1. ॐ ह्रीं श्रीमते नमः
2. ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः
3. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः
4. ॐ ह्रीं शंभवाय नमः
5. ॐ ह्रीं शंभवे नमः
6. ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः
7. ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः
8. ॐ ह्रीं प्रभवे नमः
9. ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः
10. ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः
11. ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः
12. ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः
13. ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः
14. ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः
15. ॐ ह्रीं अक्षराय नमः
16. ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः
17. ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः
18. ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः
19. ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः
20. ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः
21. ॐ ह्रीं विभवे नमः
22. ॐ ह्रीं धात्रे नमः

1. श्री जिनेन्द्रदेव के इन 1008 नाम मंत्रों को प्रतिदिन पढ़ने से बुद्धि, स्मरणशक्ति एवं प्रतिभाशक्ति दिन पर दिन बढ़ती जावेगी।

23. ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः
24. ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः
25. ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः
26. ॐ ह्रीं विधये नमः
27. ॐ ह्रीं वेधसे नमः
28. ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः
29. ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः
30. ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः
31. ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः
32. ॐ ह्रीं विश्वमूर्त्तये नमः
33. ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः
34. ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः
35. ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः
36. ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः
37. ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः
38. ॐ ह्रीं जिनाय नमः
39. ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः
40. ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः
41. ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः
42. ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः
43. ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः
44. ॐ ह्रीं अचिंत्यात्मने नमः
45. ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः
46. ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः
47. ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः
48. ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः
50. ॐ ह्रीं शिवाय नमः
51. ॐ ह्रीं पराय नमः
52. ॐ ह्रीं परतराय नमः
53. ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः
54. ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः
55. ॐ ह्रीं सनातनाय नमः
56. ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः
57. ॐ ह्रीं अजाय नमः
58. ॐ ह्रीं अजन्मने नमः
59. ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः
60. ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः
61. ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः
62. ॐ ह्रीं जेत्रे नमः
63. ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः
64. ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः
65. ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः
66. ॐ ह्रीं अनंतात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं योगिने नमः
68. ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः
69. ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः
70. ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः
71. ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः
72. ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः
73. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
74. ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः
75. ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः
76. ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः
77. ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः
78. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः
79. ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः
80. ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः
81. ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः
82. ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः

83. ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः
84. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः
85. ॐ ह्रीं अनंताय नमः
86. ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः
87. ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः
89. ॐ ह्रीं अजराय नमः
90. ॐ ह्रीं अजर्याय नमः
91. ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः
92. ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः
93. ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः
94. ॐ ह्रीं विभावसवे नमः
95. ॐ ह्रीं असंभूष्णवे नमः
96. ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः
97. ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः
98. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः
100. ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः

(ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामभ्यो नमः)

(2)

1. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः
2. ॐ ह्रीं दिव्याय नमः
3. ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः
4. ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः
5. ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः
6. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः
7. ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः
8. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः
9. ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः
10. ॐ ह्रीं भगवते नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हते नमः
12. ॐ ह्रीं अरजसे नमः
13. ॐ ह्रीं विरजसे नमः
14. ॐ ह्रीं शुचये नमः
15. ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः
16. ॐ ह्रीं केवलिने नमः
17. ॐ ह्रीं ईशानाय नमः
18. ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः
19. ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः
20. ॐ ह्रीं अमलाय नमः
21. ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः
22. ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः
23. ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः
24. ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः
25. ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः
26. ॐ ह्रीं शक्ताय नमः
27. ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः
28. ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः
29. ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः
30. ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः
31. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः
32. ॐ ह्रीं निरूक्तोक्तये नमः
33. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः
34. ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः
35. ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः
36. ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः
37. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः
38. ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः
39. ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः

40. ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः
41. ॐ ह्रीं नेत्रे नमः
42. ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः
43. ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः
44. ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः
45. ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः
46. ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः
47. ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः
49. ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः
50. ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः
51. ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः
52. ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः
53. ॐ ह्रीं वृषाय नमः
54. ॐ ह्रीं वृषपतये नमः
55. ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः
56. ॐ ह्रीं वृषभाङ्काय नमः
57. ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः
58. ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः
59. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं भूतभृते नमः
61. ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः
62. ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः
63. ॐ ह्रीं विभवाय नमः
64. ॐ ह्रीं भास्वते नमः
65. ॐ ह्रीं भवाय नमः
66. ॐ ह्रीं भावाय नमः
67. ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः
68. ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः
69. ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः
70. ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः
71. ॐ ह्रीं अभवाय नमः
72. ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः
73. ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः
74. ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः
75. ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः
76. ॐ ह्रीं सर्वादये नमः
77. ॐ ह्रीं सर्वदिशे नमः
78. ॐ ह्रीं सार्वाय नमः
79. ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः
80. ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः
81. ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः
83. ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः
84. ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः
85. ॐ ह्रीं सुगतये नमः
86. ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः
87. ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः
88. ॐ ह्रीं सुवाचे नमः
89. ॐ ह्रीं सूरये नमः
90. ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः
91. ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः
92. ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः
93. ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः
94. ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः
95. ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः
96. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः
97. ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः
98. ॐ ह्रीं सहस्रपदे नमः

99. ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः
100. ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः
(ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामभ्यो नमः)

(3)

1. ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः
2. ॐ ह्रीं स्थविराय नम
3. ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः
4. ॐ ह्रीं प्रष्ठाय नमः
5. ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः
6. ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः
7. ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः
8. ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः
9. ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः
10. ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः
11. ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः
12. ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः
13. ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः
14. ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः
15. ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः
16. ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः
17. ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः
18. ॐ ह्रीं विश्वाशिषे नमः
19. ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः
20. ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः
21. ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः
22. ॐ ह्रीं विभवाय नमः
23. ॐ ह्रीं विभयाय नमः
24. ॐ ह्रीं वीराय नमः
25. ॐ ह्रीं विशोकाय नमः
26. ॐ ह्रीं विजराय नमः
27. ॐ ह्रीं अजरते नमः
28. ॐ ह्रीं विरागाय नमः
29. ॐ ह्रीं विरताय नमः
30. ॐ ह्रीं असङ्गाय नमः
31. ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः
32. ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः
33. ॐ ह्रीं विनेयजनताबन्धवे नमः
34. ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः
35. ॐ ह्रीं वियोगाय नमः
36. ॐ ह्रीं योगविदे नमः
37. ॐ ह्रीं विदुषे नमः
38. ॐ ह्रीं विधात्रे नमः
39. ॐ ह्रीं सुविधये नमः
40. ॐ ह्रीं सुधिये नमः
41. ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः
42. ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः
43. ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः
44. ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः
45. ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः
46. ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः
47. ॐ ह्रीं वन्हिमूर्तये नमः
48. ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः
49. ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः
50. ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः
51. ॐ ह्रीं सुत्वने नमः
52. ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः
53. ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः
54. ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः
55. ॐ ह्रीं याज्याय नमः

56. ॐ ह्रीं यज्ञाङ्गाय नमः
57. ॐ ह्रीं अमृताय नमः
58. ॐ ह्रीं हविषे नमः
59. ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः
60. ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः
62. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः
63. ॐ ह्रीं अचलाय नमः
64. ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः
65. ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः
66. ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नमः
67. ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः
68. ॐ ह्रीं मंत्रविदे नमः
69. ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः
70. ॐ ह्रीं मंत्रिणे नमः
71. ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः
72. ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः
73. ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः
74. ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः
75. ॐ ह्रीं स्वंताय नमः
76. ॐ ह्रीं कृतांतांताय नमः
77. ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः
78. ॐ ह्रीं कृतिने नमः
79. ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः
80. ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः
81. ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः
82. ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः
83. ॐ ह्रीं नित्याय नमः
84. ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः
85. ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः
86. ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः
87. ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः
89. ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः
90. ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः
91. ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः
92. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः
93. ॐ ह्रीं ब्रह्मेजे नमः
94. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः
95. ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः
96. ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः
97. ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः
100. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
(ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामभ्यो नमः)

(4)

1. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः
2. ॐ ह्रीं अशोकाय नम
3. ॐ ह्रीं काय नमः
4. ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः
5. ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः
6. ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः
7. ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये नमः
8. ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः
9. ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः
10. ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः
11. ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः
12. ॐ ह्रीं इत्याय नमः

13. ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः
14. ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः
15. ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः
16. ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः
17. ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः
18. ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः
19. ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः
20. ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय नमः
21. ॐ ह्रीं गण्याय नमः
22. ॐ ह्रीं पुण्याय नमः
23. ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये नमः
24. ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः
25. ॐ ह्रीं गुणांभोधये नमः
26. ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः
27. ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः
28. ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः
29. ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः
30. ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः
31. ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः
32. ॐ ह्रीं गुणाय नमः
33. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः
34. ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः
35. ॐ ह्रीं पूताय नमः
36. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः
37. ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं अगण्याय नमः
39. ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः
40. ॐ ह्रीं गुण्याय नमः
41. ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः
42. ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः
43. ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः
44. ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः
45. ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नम
46. ॐ ह्रीं पापापेताय नमः
47. ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः
49. ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः
50. ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय नमः
51. ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः
52. ॐ ह्रीं शांताय नमः
53. ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः
54. ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः
55. ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः
56. ॐ ह्रीं निराहाराय नमः
57. ॐ ह्रीं निष्क्रियाय नमः
58. ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः
59. ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः
60. ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः
61. ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः
62. ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः
63. ॐ ह्रीं विशालाय नमः
64. ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः
65. ॐ ह्रीं अतुलाय नमः
66. ॐ ह्रीं अचिंत्यवैभवाय नमः
67. ॐ ह्रीं सुसंवृताय नमः
68. ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं सुभुजे नमः
70. ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः
71. ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः
72. ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः

73. ॐ ह्रीं मुनये नमः
74. ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः
75. ॐ ह्रीं पत्ये नमः
76. ॐ ह्रीं धीशाय नमः
77. ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः
78. ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः
79. ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः
80. ॐ ह्रीं विहतान्तकाय नमः
81. ॐ ह्रीं पित्रे नमः
82. ॐ ह्रीं पितामहाय नमः
83. ॐ ह्रीं पात्रे नमः
84. ॐ ह्रीं पवित्राय नमः
85. ॐ ह्रीं पावनाय नमः
86. ॐ ह्रीं गतये नमः
87. ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः
88. ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः
89. ॐ ह्रीं वर्याय नमः
90. ॐ ह्रीं वरदाय नमः
91. ॐ ह्रीं परमाय नमः
92. ॐ ह्रीं पुंसे नमः
93. ॐ ह्रीं कवये नमः
94. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः
95. ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः
96. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः
97. ॐ ह्रीं पुरवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः
99. ॐ ह्रीं हेतवे नमः
100. ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः

(ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामभ्यो नमः)

(5)

1. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः
2. ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः
3. ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः
4. ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः
5. ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः
6. ॐ ह्रीं पुंडरीकाक्षाय नमः
7. ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः
8. ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः
9. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः
10. ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय नमः
11. ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः
12. ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः
13. ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः
14. ॐ ह्रीं महाबोधये नमः
15. ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय नमः
16. ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः
17. ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः
18. ॐ ह्रीं वेदविदे नमः
19. ॐ ह्रीं वेद्याय नमः
20. ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः
21. ॐ ह्रीं विदांवराय नमः
22. ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः
23. ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः
24. ॐ ह्रीं विवेदाय नमः
25. ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः
26. ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः
27. ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः
28. ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः

29. ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः
30. ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः
31. ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः
32. ॐ ह्रीं युगादये नमः
33. ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः
34. ॐ ह्रीं अतींद्राय नमः
35. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः
36. ॐ ह्रीं धींद्राय नमः
37. ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः
39. ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय नमः
40. ॐ ह्रीं अहमिंद्रार्च्याय नमः
41. ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः
42. ॐ ह्रीं महते नमः
43. ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः
44. ॐ ह्रीं कारणाय नमः
45. ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः
46. ॐ ह्रीं पारगाय नमः
47. ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः
48. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः
49. ॐ ह्रीं गहनाय नमः
50. ॐ ह्रीं गुह्याय नमः
51. ॐ ह्रीं पराघ्र्याय नमः
52. ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः
53. ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये नमः
54. ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः
55. ॐ ह्रीं अचिंत्यर्द्धये नमः
56. ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः
57. ॐ ह्रीं प्राग्रयाय नमः
58. ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः
59. ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः
60. ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः
61. ॐ ह्रीं अग्राय नमः
62. ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः
63. ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः
64. ॐ ह्रीं महातपसे नमः
65. ॐ ह्रीं महातेजसे नमः
66. ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः
67. ॐ ह्रीं महोदयाय नमः
68. ॐ ह्रीं महायशसे नमः
69. ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः
70. ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः
71. ॐ ह्रीं महाधृतये नमः
72. ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः
73. ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः
74. ॐ ह्रीं महासंपदे नमः
75. ॐ ह्रीं महाबलाय नमः
76. ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः
77. ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः
78. ॐ ह्रीं महाभूतये नमः
79. ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः
80. ॐ ह्रीं महामतये नमः
81. ॐ ह्रीं महानीतये नमः
82. ॐ ह्रीं महाक्षांतये नमः
83. ॐ ह्रीं महादयाय नमः
84. ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः
85. ॐ ह्रीं महाभागाय नमः
86. ॐ ह्रीं महानंदाय नमः
87. ॐ ह्रीं महाकवये नमः
88. ॐ ह्रीं महामहसे नमः

89. ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः
90. ॐ ह्रीं महाकांतये नमः
91. ॐ ह्रीं महावपुषे नमः
92. ॐ ह्रीं महादानाय नमः
93. ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः
94. ॐ ह्रीं महायोगाय नमः
95. ॐ ह्रीं महागुणाय नमः
96. ॐ ह्रीं महामहपतये नमः
97. ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः
98. ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः
99. ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः
100. ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः

(ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामभ्यो नमः)

(6)

1. ॐ ह्रीं महामुनये नमः
2. ॐ ह्रीं महामौनिने नमः
3. ॐ ह्रीं महाध्यानाय नमः
4. ॐ ह्रीं महादमाय नमः
5. ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः
6. ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः
7. ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः
8. ॐ ह्रीं महामखाय नमः
9. ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः
10. ॐ ह्रीं मह्याय नमः
11. ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः
12. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः
13. ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अमेयाय नमः
15. ॐ ह्रीं महोपायाय नमः
16. ॐ ह्रीं महोमयाय नमः
17. ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः
18. ॐ ह्रीं मंत्रे नमः
19. ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः
20. ॐ ह्रीं महायतये नमः
21. ॐ ह्रीं महानादाय नमः
22. ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः
23. ॐ ह्रीं महेज्याय नमः
24. ॐ ह्रीं महसांपतये नमः
25. ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः
26. ॐ ह्रीं धुर्याय नमः
27. ॐ ह्रीं महोदार्याय नमः
28. ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः
29. ॐ ह्रीं महात्मने नमः
30. ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः
31. ॐ ह्रीं महर्षये नमः
32. ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः
33. ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः
34. ॐ ह्रीं शूराय नमः
35. ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः
36. ॐ ह्रीं गुरवे नमः
37. ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः
38. ॐ ह्रीं अनंताय नमः
39. ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः
40. ॐ ह्रीं वशिने नमः
41. ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः
42. ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः
43. ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः
44. ॐ ह्रीं क्षांताय नमः
45. ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः

46. ॐ ह्रीं शमिने नमः
47. ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः
48. ॐ ह्रीं ध्यानमहाधर्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः
50. ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः
51. ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः
52. ॐ ह्रीं महादेवाय नमः
53. ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः
54. ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः
55. ॐ ह्रीं साधवे नमः
56. ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः
57. ॐ ह्रीं हराय नमः
58. ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः
59. ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं शमात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः
62. ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः
63. ॐ ह्रीं अचिंत्याय नमः
64. ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः
65. ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः
66. ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः
68. ॐ ह्रीं योगात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः
70. ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः
71. ॐ ह्रीं आत्मने नमः
72. ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः
73. ॐ ह्रीं परमाय नमः
74. ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः
75. ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः
76. ॐ ह्रीं कामारये नमः
77. ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः
78. ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः
79. ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः
80. ॐ ह्रीं प्रणताय नमः
81. ॐ ह्रीं प्राणाय नमः
82. ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः
83. ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः
84. ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः
85. ॐ ह्रीं प्रणिधये नमः
86. ॐ ह्रीं दक्षाय नमः
87. ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः
88. ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः
89. ॐ ह्रीं अध्वराय नमः
90. ॐ ह्रीं आनंदाय नमः
91. ॐ ह्रीं नंदनाय नमः
92. ॐ ह्रीं नंदाय नमः
93. ॐ ह्रीं वंद्याय नमः
94. ॐ ह्रीं अनिंद्याय नमः
95. ॐ ह्रीं अभिनंदनाय नमः
96. ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः
97. ॐ ह्रीं कामदाय नमः
98. ॐ ह्रीं काम्याय नमः
99. ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः
100. ॐ ह्रीं अरिञ्जयाय नमः

(ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामभ्यो नमः)

(7)

1. ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः
2. ॐ ह्रीं प्राकृताय नमः
3. ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः

4. ॐ ह्रीं अंतकृते नमः
5. ॐ ह्रीं कांतिगवे नमः
6. ॐ ह्रीं कांताय नमः
7. ॐ ह्रीं चिंतामणये नमः
8. ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः
9. ॐ ह्रीं अजिताय नमः
10. ॐ ह्रीं जितकामारये नमः
11. ॐ ह्रीं अमिताय नमः
12. ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः
13. ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः
14. ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः
15. ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः
16. ॐ ह्रीं जितान्तकाय नमः
17. ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः
18. ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः
19. ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः
20. ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः
21. ॐ ह्रीं महेंद्रवंद्याय नमः
22. ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः
23. ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय नमः
25. ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः
26. ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः
27. ॐ ह्रीं अजाताय नमः
28. ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः
29. ॐ ह्रीं मनवे नमः
30. ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः
31. ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः
32. ॐ ह्रीं अनत्ययाय नमः
33. ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः
34. ॐ ह्रीं अधिकाय नमः
35. ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः
36. ॐ ह्रीं सुधिये नमः
37. ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः
38. ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः
39. ॐ ह्रीं स्वामिने नमः
40. ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः
41. ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः
42. ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः
43. ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः
44. ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः
45. ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः
46. ॐ ह्रीं कामनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अनघाय नमः
48. ॐ ह्रीं क्षेमिने नमः
49. ॐ ह्रीं क्षेमंकराय नमः
50. ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः
51. ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः
52. ॐ ह्रीं क्षमिने नमः
53. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः
54. ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नमः
55. ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः
56. ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः
57. ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः
58. ॐ ह्रीं धातवे नमः
59. ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः
60. ॐ ह्रीं सुनयाय नमः
61. ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः
62. ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः
63. ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः

64. ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः
65. ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः
66. ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः
68. ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः
69. ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः
70. ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः
71. ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः
72. ॐ ह्रीं सत्याय नमः
73. ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः
74. ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः
75. ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः
76. ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः
77. ॐ ह्रीं दवीयसे नमः
78. ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः
79. ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः
80. ॐ ह्रीं अनणवे नमः
81. ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे नमः
82. ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः
83. ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः
84. ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः
85. ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः
86. ॐ ह्रीं सदागतये नमः
87. ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः
88. ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः
89. ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः
90. ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः
91. ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः
92. ॐ ह्रीं सौम्याय नमः
93. ॐ ह्रीं सुखदाय नमः
94. ॐ ह्रीं सुहिताय नमः
95. ॐ ह्रीं सुहृते नमः
96. ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः
97. ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः
98. ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः
99. ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः
100. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः

(ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामभ्यो नमः)

(8)

1. ॐ ह्रीं बृहद्बृहस्पतये नमः
2. ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः
3. ॐ ह्रीं वाचस्पतये नमः
4. ॐ ह्रीं उदारधिये नमः
5. ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः
6. ॐ ह्रीं धिषणाय नमः
7. ॐ ह्रीं धीमते नमः
8. ॐ ह्रीं शेमुषीशाय नमः
9. ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः
10. ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः
11. ॐ ह्रीं नयोत्तुङ्गाय नमः
12. ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः
13. ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः
14. ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः
15. ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः
16. ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः
17. ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः
18. ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः
19. ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः

20. ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः
21. ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः
22. ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः
23. ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः
24. ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः
25. ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः
26. ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः
27. ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः
28. ॐ ह्रीं द्रढीयसे नमः
29. ॐ ह्रीं इनाय नमः
30. ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः
31. ॐ ह्रीं मनोहराय नमः
32. ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय नमः
33. ॐ ह्रीं धीराय नमः
34. ॐ ह्रीं गंभीरशासनाय नमः
35. ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः
36. ॐ ह्रीं दयायागाय नमः
37. ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः
38. ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः
39. ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः
40. ॐ ह्रीं देवाय नमः
41. ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः
42. ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः
43. ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः
44. ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः
45. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः
46. ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः
47. ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः
48. ॐ ह्रीं सुभगाय नमः
49. ॐ ह्रीं त्यागिने नमः
50. ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः
51. ॐ ह्रीं समाहिताय नमः
52. ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः
53. ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः
54. ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः
55. ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः
56. ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः
57. ॐ ह्रीं अलेपाय नमः
58. ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः
59. ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः
60. ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः
61. ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः
62. ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः
63. ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः
64. ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः
65. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः
66. ॐ ह्रीं अनंतधामर्षये नमः
67. ॐ ह्रीं मंगलाय नमः
68. ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः
69. ॐ ह्रीं अनघाय नमः
70. ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः
71. ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः
72. ॐ ह्रीं दिष्टये नमः
73. ॐ ह्रीं दैवाय नमः
74. ॐ ह्रीं अगोचराय नमः
75. ॐ ह्रीं अमूर्त्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः
77. ॐ ह्रीं एकाय नमः
78. ॐ ह्रीं नैकाय नमः
79. ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः

80. ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः
81. ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं योगविदे नमः
83. ॐ ह्रीं योगिवंदिताय नमः
84. ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः
85. ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः
86. ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः
87. ॐ ह्रीं शंकराय नमः
88. ॐ ह्रीं शंवदाय नमः
89. ॐ ह्रीं दान्ताय नमः
90. ॐ ह्रीं दमिने नमः
91. ॐ ह्रीं क्षांतिपरायणाय नमः
92. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः
93. ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः
94. ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः
95. ॐ ह्रीं परापराय नमः
96. ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः
97. ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः
98. ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः
99. ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः
100. ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः

(ॐ ह्रीं बृहदादिशतनामभ्यो नमः)

(9)

1. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः
2. ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः
3. ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः
4. ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः
5. ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः
6. ॐ ह्रीं पूज्याय नमः
7. ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः
8. ॐ ह्रीं पुराणाय नमः
9. ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः
10. ॐ ह्रीं पूर्वाय नमः
11. ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः
12. ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः
13. ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः
14. ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः
15. ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः
16. ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः
17. ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः
18. ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नम
19. ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः
20. ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः
21. ॐ ह्रीं कल्याय नमः
22. ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः
23. ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः
24. ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने नमः
25. ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः
26. ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः
27. ॐ ह्रीं कलातीताय नमः
28. ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः
29. ॐ ह्रीं कलाधराय नमः
30. ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः
31. ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः
32. ॐ ह्रीं जगद्बंधवे नमः
33. ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः
34. ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः
35. ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः
36. ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः
37. ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नमः

38. ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः
39. ॐ ह्रीं गोप्याय नमः
40. ॐ ह्रीं गूढात्मने नमः
41. ॐ ह्रीं गूढगोचराय नमः
42. ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः
43. ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः
44. ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः
45. ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः
46. ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः
47. ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः
48. ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः
49. ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः
50. ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः
51. ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः
52. ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः
53. ॐ ह्रीं तुंगाय नमः
54. ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः
55. ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः
56. ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे नमः
57. ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः
58. ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छवये नमः
59. ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः
60. ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय नमः
61. ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः
62. ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः
63. ॐ ह्रीं शातकुंभनिभप्रभाय नमः
64. ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः
65. ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः
66. ॐ ह्रीं तप्तजांबूनदद्युतये नमः
67. ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः
68. ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः
69. ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः
70. ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः
71. ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः
72. ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः
73. ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः
74. ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः
75. ॐ ह्रीं क्षमाय नमः
76. ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः
77. ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः
78. ॐ ह्रीं अमोघाय नमः
79. ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः
80. ॐ ह्रीं शासित्रे नमः
81. ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः
82. ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय नमः
83. ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः
84. ॐ ह्रीं शिवतातये नमः
85. ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः
86. ॐ ह्रीं शांतिदाय नमः
87. ॐ ह्रीं शांतिकृते नमः
88. ॐ ह्रीं शांतये नमः
89. ॐ ह्रीं कांतिमते नमः
90. ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः
91. ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः
92. ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः
93. ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः
94. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः
95. ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः
96. ॐ ह्रीं स्थावराय नमः
97. ॐ ह्रीं स्थास्नवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः

99. ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः
100. ॐ ह्रीं पृथवे नमः
(ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामभ्यो नमः)

(10)

1. ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः
2. ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः
3. ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थेशाय नमः
4. ॐ ह्रीं निरंबराय नमः
5. ॐ ह्रीं निष्किंचनाय नमः
6. ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः
7. ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः
8. ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः
9. ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः
10. ॐ ह्रीं अनंतौजसे नमः
11. ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नमः
12. ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः
13. ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः
15. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः
16. ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः
17. ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये नमः
18. ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः
19. ॐ ह्रीं शंवदे नमः
20. ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः
21. ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः
22. ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः
23. ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः
24. ॐ ह्रीं अनिद्रालवे नमः
25. ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः
26. ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः
27. ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः
28. ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः
29. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः
30. ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः
31. ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः
32. ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः
33. ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय नमः
34. ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः
35. ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः
36. ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय नमः
37. ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः
39. ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः
40. ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः
41. ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः
42. ॐ ह्रीं आप्ताय नमः
43. ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः
44. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः
45. ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः
46. ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः
47. ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः
48. ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः
49. ॐ ह्रीं मारजिते नमः
50. ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः
51. ॐ ह्रीं सुतनवे नमः
52. ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः
53. ॐ ह्रीं सुगताय नमः
54. ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः
55. ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः

56. ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः
57. ॐ ह्रीं वीतभिये नमः
58. ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः
59. ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः
60. ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः
61. ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः
62. ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः
63. ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः
64. ॐ ह्रीं लोकपतये नमः
65. ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः
66. ॐ ह्रीं अपारधिये नमः
67. ॐ ह्रीं धीरधिये नमः
68. ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः
69. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
70. ॐ ह्रीं सूनृतपूतवाचे नमः
71. ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः
72. ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः
73. ॐ ह्रीं यतये नमः
74. ॐ ह्रीं नियमितेंद्रियाय नमः
75. ॐ ह्रीं भदन्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः
77. ॐ ह्रीं भद्राय नमः
78. ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः
79. ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः
80. ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारये नमः
81. ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः
82. ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः
83. ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः
84. ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः
85. ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः
86. ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नमः
87. ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः
88. ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः
89. ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः
90. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः
91. ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः
92. ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः
93. ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः
94. ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः
95. ॐ ह्रीं शांतारये नमः
96. ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः
97. ॐ ह्रीं दयानिधये नमः
98. ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः
99. ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः
100. ॐ ह्रीं कृपालवे नमः
101. ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः
102. ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः
103. ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः
104. ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः
105. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः
106. ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः
107. ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः
108. ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः
(ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशत-नामभ्यो नमः)

// इति सहस्रनाममंत्राः //

जिनसहस्रनाम पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

जिनवर की प्रथम दिव्य देशना, नंतर सुरपति अति भक्ती से।
निज विकसित नेत्र हजार बना, प्रभु को अवलोकें विक्रिय से।।
प्रभु एक हजार आठ लक्षणधारी सब भाषा के स्वामी।
शुभ एक हजार आठ नामों से, स्तुति करता वह शिवगामी।।

–दोहा–

एक हजार सु आठ ये, श्री जिननाम महान।
उनकी मैं पूजा करूँ, करते इत आह्वान।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-चाल नंदीश्वर पूजा

सरयू नदि का शुचिनीर, सुवरण भृंग भरूँ।
मिल जावे भवदधि तीर, जिनपद धार करूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर शुद्ध, चंदन संग घिसूँ।
जिनपद चर्चत अविरुद्ध, भव संताप नशूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल धौत, तंदुल पुंज धरूँ।
मिल जावे अक्षय सौख्य, प्रभु पद पूज करूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जूही केवड़ा गुलाब, सुरभित सुमनों से।
पूजत छुट जाऊँ नाथ, भव भव भ्रमणों से।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण पोली घृतपूर, हलुवा भर थाली।
पूजत हो अमृतपूर, मनरथ नहिं खाली।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
भगता मन का तम जाल, ज्योती प्रगटे ही।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस गंधी धूप सुगंध, खेऊँ अग्नी में।
सब जलते कर्म प्रबंध, पाऊँ निजसुख मैं।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेब, अर्पण करते ही।
निज आतम सम्पत्ति लेव, फल से जजते ही।।

शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदि, अर्घ्य बनाऊँ मैं।
अर्पण करते भव व्याधि, सर्व नशाऊँ मैं।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सहस्र नाम को पूजहूँ, शांतीधारा देय।
सर्वसौख्य सम्पति मिले, आत्मसुधा बरसेय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प बहु, सुरभित दिक् महकंत।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

महातेज के धाम प्रभु, नमूँ नमूँ त्रयकाल।
एक हजार सु आठ तुम, नाममंत्र जयमाल।।1।।

चाल –शेर हे दीनबंधु.....

जय जय जिनेन्द्र! तुम असंख्य नाम गुण भरें।
जय जय जिनेन्द्र! तुम अनंत सौख्य गुण भरें।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।2।।

हे नाथ! यद्यपि आप नाम वचन से कहें।
फिर भी वचन अगोचर मुनिगण तुम्हें कहें।।

हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।3।।

तुम नाम संस्तवन सदा अभीष्ट को फले।
भगवन् तुम्हीं तो भक्तों के बंधु हो भले।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।4।।

स्वामिन्! जगत्प्रकाशी हो 'एक' ही तुम्हीं।
हो ज्ञान दर्श गुण से 'दोरूप' भी तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।5।।

रत्नत्रयी शिवमार्ग से प्रभु 'तीनरूप' हो।
आनन्त्य चतुष्टय से प्रभु 'चाररूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।6।।

हो पंच परमेष्ठी स्वरूप 'पाँचरूप' भी।
प्रभु पंचकल्याणक से भी 'पाँचरूप' ही।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।7।।

जीवादि छहों द्रव्य जानते 'छहरूप' हो।
प्रभु सात नयों को निरूप 'सातरूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।8।।

सम्यक्त्व आदि आठ गुण से 'आठरूप' हो।
नव केवली लब्धी से आप 'नवस्वरूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।9।।

अवतार दश महाबलादि दशस्वरूप हो।
हे ईश! दया कीजिए त्रैलोक्य भूप हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।10।।

मैं आप विविध नाम पुष्प गूँथ-गूँथ के।
स्तोत्र की माला बनाई पूजहूँ उससे।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।11।।

भगवन् प्रसन्न होय अनुग्रह करो मुझपे।
स्तोत्र से वच हों पवित्र शीश नमे से।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।12।।

प्रभु नाम स्मृतिमात्र से भाक्तिक पवित्र हों।
जो भक्ति से पूजा करें कल्याण पात्र हों।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।13।।

इस विध समवसरण में इंद्र ने स्तुति किया।
फिर श्रीविहार हेतु प्रभु से प्रार्थना किया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।14।।

हे नाथ! भव्य धान्य पाप अनावृष्टि से।
सूखें उन्हें सींचो सुधर्म सुधावृष्टि से।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।15।।

भगवंत! आप विजय की उद्योग सूचना।
ये धर्मचक्र है तैयार शोभता घना।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।16।।

हे देव! आप मोह शत्रु पे विजय किया।
शिवमार्ग के उपदेश का अवसर ये आ गया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।17।।

जिनवर स्वयं तैयार श्रीविहार के लिए।
बस इंद्र की ये प्रार्थना नियोग के लिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।18।।

तत्क्षण समवसरण सभी विलीन हो गया।
इंद्रों ने प्रभु विहार का उत्सव महा किया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।19।।

जय जय ध्वनी ऊँची उठी बाजे बजे घने।
संगीत गीत नृत्य करें देवगण घने।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।20।।

आकाश में अधर सुवर्ण कमल रच दिए।
सुरभित कमल पे नाथ चरण धरत चल दिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।21।।

गंधोद वृष्टि, पुष्पवृष्टि मंद पवन है।
अतिशय विभूति आप के विहार समय है।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।22।।

आरे हजार धर्मचक्र चमचमा रहा।
जिनराज आगे-आगे चले शोभता महा।।

हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।23।।

हे देव! मेरी प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।
'कैवल्यज्ञानमती' नाथ! तूर्ण[1] दीजिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।24।।

–घत्ता –

जय जिन नामावलि, स्तुति हारावलि,
जो भविजन कंठे धरहीं।
उन स्मृति शक्ती, क्षण क्षण बढ़ती,
'अतिशय ज्ञान करें सबहीं।।25।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद –

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम, सुअर्चना विधि व्रत करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें, सहस मंगल विस्तरें।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो, हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों, कामनाएँ भी फलें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

1. शीघ्र।

सहस्रनाम व्रत विधि

शास्त्रों में अनेक प्रकार के व्रतों के करने का विधान है। ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में सहस्रनामव्रत करने की विधि बतलाई गई है। इस व्रत में श्री जिनेन्द्रदेव के एक हजार आठ नामों के एक हजार आठ व्रत करने को कहा है। व्रत की उत्तम विधि उपवास है, मध्यम विधि में नीरस पेय आदि लेना चाहिए और जघन्य विधि में एकाशन करके भी व्रत किया जाता है। इस व्रत को ''रानी चेलना'' ने श्री गौतम स्वामी से ग्रहण करके किया था, ऐसा ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में कहा है।

व्रत के दिन जिनप्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके श्री आदिनाथ भगवान की एवं सहस्रनाम की पूजन करना चाहिए। पुनः प्रत्येक व्रत में क्रम से एक-एक मंत्र की पूजा व जाप्य भी कर सकते हैं। जैसे-प्रथम व्रत में भगवान के सहस्रनामें में प्रथम नाम ''श्रीमान्'' है, उसकी पूजन और जाप्य इस प्रकार है–

ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।
ॐ ह्रीं श्रीमते जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।
ॐ ह्रीं श्रीमते संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।
ॐ ह्रीं श्रीमते अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य –

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैः, चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुलैः, जिनगृहे जिनराजमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्रीमते अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

इस प्रकार पूजन करके इसी मंत्र का जाप्य करें।

जाप्य–**ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।**

समुच्चय जाप–**ॐ ह्रीं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षीसहिताय अष्टोत्तर-सहस्रनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः।**

द्वितीय व्रत में–**ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्!** इत्यादि प्रकार से आह्वानन करके–

''ॐ ह्रीं स्वयंभुवे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं'' इत्यादि बोलकर अष्टद्रव्य से पूजन करके **''ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः''** मंत्र की जाप्य करें। इसी प्रकार प्रत्येक मंत्र की पूजा में नामवाची शब्द में ''जिनेन्द्र'' शब्द लगाकर संबोधन विभक्ति से आह्वानन करके चतुर्थी विभक्ति लगाकर पूजन करना चाहिए जैसा कि मंत्रों में चतुर्थी विभक्ति है ही है।

इस व्रत के उद्यापन में ''बृहत् सहस्रनाम मंडल विधान'' करके 1008 कमल पुष्पों को चढ़ाकर 1008 कलशों से जिनप्रतिमा का महाअभिषेक करना चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा, जिनमंदिर आदि का निर्माण कराकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि कराना चाहिए। यथाशक्ति मंदिर में उपकरणदान, चतुर्विध संघ को चतुर्विध दान आदि देकर धर्मप्रभावनापूर्वक उद्यापन करके व्रत पूर्ण करना चाहिए।

लघु सहस्रनाम व्रत विधि-

महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रांतों में व साधु संघों में सहस्रनाम व्रत में ग्यारह उपवास करने की भी परम्परा है। इसमें भी उपवास के दिन सहस्रनाम पूजा करके 1008 मंत्रों को पढ़कर समुच्चय जाप्य करना चाहिए। सहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर एक-एक अध्याय के अंत में अर्घ्य चढ़ाने की भी परम्परा है इस प्रकार विधिवत् पूजन करके समुच्चय जाप्य करना चाहिए। समुच्चय जाप्य ऊपर दी गई है।

ग्यारह व्रतों में नीचे लिखी अलग-अलग जाप्य भी कर सकते हैं–

1. ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

2. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

3. ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

4. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

5. ॐ ह्रीं वृक्षलक्षणादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

6. ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

7. ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

8. ॐ ह्रीं वृहद्बृहस्पत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

9. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

10. ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

11. ॐ ह्रीं श्रीमदादि-अष्टोत्तरसहस्रनामधारकाय श्री जिनेन्द्राय नमः।

इस व्रत को भी पूर्ण करके ''सहस्रनाम मंडल विधान'' करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस सहस्रनाम व्रत के प्रभाव से भव्यजीव नाना सुखों को भोगकर अंत में एक हजार आठ लक्षण व नाम के धारक ऐसे जिनेन्द्रदेव के पद को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जो इस व्रत को नहीं कर सकते, वे भी यदि सहस्रनाम मंत्रों को पढ़ेंगे और पूजा करेंगे, तो नियम से अपनी स्मरणशक्ति व सम्यग्ज्ञान को वृद्धिंगत करते हुए जीवन में चारित्र को ग्रहण कर महान बनेंगे और परम्परा से मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो जावेंगे।

सरस्वती स्तोत्र

बारह अंगंगिज्जा, दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।
चोद्दसपुव्वाहरणा, ठावे दव्वाय सुयदेवी।।1।।

आचारशिरसं सूत्र-कृतवक्त्रां सुकंठिकाम्।
स्थानेन समवायांग-व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ।।2।।

वाग्देवतां ज्ञातृकथो-पासकाध्ययनस्तनीम्।
अंतकृद्दशसन्नाभि-मनुत्तरदशांगतः ।।3।।

सुनितंबां सुजघनां, प्रश्नव्याकरणश्रुतात्।
विपाकसूत्रदृग्वाद-चरणां चरणांबराम् ।।4।।

सम्यक्त्वतिलकां पूर्व-चतुर्दशविभूषणाम्।
तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम्।।5।।

आप्तदृष्टप्रवाहौघ-द्रव्यभावाधिदेवताम् ।
परब्रह्मपथादृप्तां, स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम् ।।6।।

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं,
न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम् ।
सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि ! नूनं,
प्राचीमतो जयसि देवि ! तदल्पसूतिम् ।।7।।

आभवादपि दुरासदमेव,
श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम् ।
जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां,
त्वत्प्रसादत् इहांब ! नमस्ते।।8।।

चेतश्चमत्कारकरा जनानां,
महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।

1. प्रतिष्ठातिलक पृ. 762।

हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात्,
तवैव लोकांब ! नमोस्तु तुभ्यम् ।।9।।

सकलयुवतिसृष्टेरंब ! चूडामणिस्त्वं,
त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम् ।
त्वमसि च जिनवाणि ! स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या,
तदिह तव पदाब्जं, भूरिभक्त्या नमामः[1]।।10।।

जिनवाणी स्तुति

हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।

श्रुत का भण्डार भरा, तेरे ज्ञान की गंगा में।
जन मन शृंगार करा, गुरुवर मुनि चन्दा ने।।

शृंगार सहित माता, श्रुतज्ञान पूर्ण कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।1।।

प्रभु वीर की वाणी सुन, गणधर ने संवारा है।
मुनिगण उस पथ पर चल, निज ज्ञान सुधारा है।

निज ज्ञान किरण दाता, आलोक ज्ञान भर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।2।।

चंदन चंदा गंगा, तन शीतल कर सकते।
मुक्ता मालाएं भी, नहिं मन को हर सकते ।।

''चंदना'' सभी जग को, शारद मां का वर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।3।।

1. प्रतिष्ठातिलक पृ. 761।

सरस्वती देवी के १०८ मंत्र

अर्हद्वक्त्राब्जसंभूतां, गणाधीशावतारितां।
महर्षिधारितां स्तोष्ये, नाम्नामष्टशतेन गां।।1।।

1. ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः
2. ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः
3. ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः
4. ॐ ह्रीं वाण्यै नमः
5. ॐ ह्रीं शारदायै नमः
6. ॐ ह्रीं गिरे नमः
7. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः
8. ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः
9. ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः
10. ॐ ह्रीं देव्यै नमः
11. ॐ ह्रीं भारत्यै नमः
12. ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः
13. ॐ ह्रीं आचारसूत्रकृतपादायै नमः
14. ॐ ह्रीं स्थानतुर्यांगजंघायै नमः
15. ॐ ह्रीं व्याख्या-प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारुरूभासुरायै नमः
16. ॐ ह्रीं उपासकांग सन्मध्यायै नमः
17. ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांगनाभिकायै नमः
18. ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपत्तिदशप्रश्न-व्याकरणस्तन्यै नमः
19. ॐ ह्रीं विपाकसूत्रसद्वक्षसे नमः
20. ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगकंधरायै नमः
21. ॐ ह्रीं परिकर्ममहासूत्रविपुलांस-विराजितायै नमः
22. ॐ ह्रीं चन्द्र-मार्तंडप्रज्ञप्तिभास्वद्बाहु-सुबल्ल्यै नमः
23. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सागरप्रज्ञप्तिसत्करायै नमः
24. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिविभ्राजत्पंच-शाखामनोहरायै नमः
25. ॐ ह्रीं पूर्वानुयोगवदनायै नमः
26. ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः
27. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसन्नासायै नमः
28. ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः
29. ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादौष्ठायै नमः
30. ॐ ह्रीं चित्प्रवादकपोलायै नमः
31. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः
32. ॐ ह्रीं आत्मप्रवादमहाहनवे नमः
33. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादसत्तालवे नमः
34. ॐ ह्रीं प्रत्याख्याननललाटायै नमः
35. ॐ ह्रीं विद्यानुवादकल्याणनामधेय-सुलोचनायै नमः
36. ॐ ह्रीं प्राणावायक्रियाविशालपूर्वभ्रू-धनुर्लतायै नमः
37. ॐ ह्रीं लोकबिन्दुमहासारचूलिका-श्रवणद्वयायै नमः
38. ॐ ह्रीं स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः
39. ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः
40. ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः

41. ॐ ह्रीं रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः
42. ॐ ह्रीं आकाशगतसौदर्यायै नमः
43. ॐ ह्रीं श्रीकलापि-सुवाहनायै नमः
44. ॐ ह्रीं निश्चयव्यवहारदृड्.नूपुरायै नमः
45. ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः
46. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः
47. ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः
48. ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः
49. ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः
50. ॐ ह्रीं व्यवहारोद्घकटकायै नमः
51. ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः
52. ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः
53. ॐ ह्रीं समभिरुढ़महांकुशायै नमः
54. ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः
55. ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः
56. ॐ ह्रीं जपमालालसद्हस्तायै नमः
57. ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः
58. ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः
59. ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः
60. ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः
61. ॐ ह्रीं शुक्लध्यानविशेषकायै नमः
62. ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः
63. ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः
64. ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासन-निवासिन्यै नमः
65. ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः
66. ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नमः
67. ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनयानूनपर्याया-र्थिकचामरायै नमः
68. ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः
69. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः
70. ॐ ह्रीं वाड्.मयरूपिण्यै नमः
71. ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः
72. ॐ ह्रीं गवे नमः
73. ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः
74. ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः
75. ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः
76. ॐ ह्रीं भव्यशरण्यायै नमः
77. ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः
78. ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः
79. ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः
80. ॐ ह्रीं चिदानन्दैकरूपिण्यै नमः
81. ॐ ह्रीं शारदायै नमः
82. ॐ ह्रीं वरदायै नमः
83. ॐ ह्रीं नित्यायै नमः
84. ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदायै नमः
85. ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः
86. ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः
87. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः
88. ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः
89. ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः
90. ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः
91. ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः
92. ॐ ह्रीं सत्यै नमः
93. ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः
94. ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः
95. ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः
96. ॐ ह्रीं विद्यायै नमः
97. ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्ये नमः

98. ॐ ह्रीं मात्रे नमः
99. ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः
100.ॐ ह्रीं कलायै नमः
101.ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः
102.ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः
103.ॐ ह्रीं सर्वशोकप्रणाशिन्यै नमः
104.ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः
105.ॐ ह्रीं पूतायै नमः
106.ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः
107.ॐ ह्रीं ब्रह्मलोकस्थिरावासायै नमः
108.ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देवतायै नमः।

इदमष्टोत्तरशतं, भारत्याः प्रतिवासरं।
यः प्रकीर्तयते भक्त्या, स वै वेदांतगो भवेत् ।।1।।

कवित्वं गमकत्वं च , वादितां वाग्मितामपि।
समाप्नुयादिदं स्तोत्र-मधीयानो निरंतरं।।2।।

आयुष्यं च यशस्यं च, स्तोत्रमेतदनुस्मरन् ।
श्रुतकेवलितां लब्ध्वा, सूरिर्ब्रह्म भजेत्परं।।3।।

सरस्वती पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्यध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचना करी।।
इन अंग पूरब शास्त्र के ही, अंश ये सब शास्त्र हैं।
उस जैनवाणी को जजूँ, जो ज्ञान अमृतसार है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –चामर छन्द

जैन साधु चित्त सम, पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा, पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा

केशरादि को घिसाय, स्वर्ण पात्र में भरी।
ताप पाप शांति हेतु, पूजहूँ इसी घरी ।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान, धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते, मिले गुणों कि माल है।।

द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब चंप केतकी चुनायके ।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय, पुष्प को चढ़ावते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डुकादि व्यंजनों से, थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप, भक्ति से चढ़ाय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्वाल, आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती, हृदय में धारहूँ।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले दशांग, अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े, सुगंधि को बिखेरते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब संतरा अनार, द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष सौख्य हेतु शास्त्र, के समीप ले धरें।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि गंध शालि पुष्प, चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ्य, से जजें सुयश मिले।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांतिधार देय के।
विश्वशांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

गंध से समस्तदिक् , सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख व्याधि हो कदा।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिं।

जाप्य–**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगाय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

द्वादशांग हे वाङ्मय ! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूँ शीघ्र भवसिंधु।।1।।

–शंभु छन्द –

जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।।
जय जय अठरह महाभाषाएँ, लघु सात शतक भाषाएँ हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझे जिनमहिमा ये हैं।।2।।

जिनदिव्यध्वनी को सुनकर के, गणधर गूँथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पाँच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।

पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पाँच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।3।।

इक पद सोलह सौ चौंतिस कोटी, और तिरासी लाख तथा।
है सात हजार आठ सौ अट्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर, वह अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।4।।

जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्दरूप और ग्रन्थरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है।।5।।

जिनको केवलज्ञानी जाने, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भी अनंतवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हो पदार्थ।
उन प्रज्ञापनीय से भी अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।6।।

फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।
यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।7।।

श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे।।
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निज आत्म सुधारस को चाखो।।8।।

इस ढाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर जिनवर होते।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल को धोते।।
जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।9।।

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान् जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।

हे सरस्वती ! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।11।।

–दोहा–

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
त्रिकरण शुद्धी मैं नमूँ, मिले सिद्धि सर्वार्थ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

सब भाषामय सरस्वती, जिनकन्या जिनवाणि।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो, माता जगकल्याणि।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

ज्ञान पचीसी व्रत विधि

ज्ञान पचीसी व्रत में ग्यारस के ग्यारह उपवास और चौदश के चौदह उपवास ऐसे कुल पचीस व्रत होते हैं। यह व्रत ग्यारह अंग और चौदह पूर्वरूप ज्ञान की आराधना के लिए किया जाता है। इसको श्रावण सुदी चतुर्दशी से करने का विधान है।

मतांतर से इस व्रत में दशमी के दश उपवास और पूर्णिमा के पंद्रह उपवास करने का भी विधान है।

इस व्रत में प्रधानरूप से श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक एवं श्रुतज्ञान (सरस्वती) की पूजा करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत की उत्तम विधि तो उपवास ही है। मध्यम एवं जघन्य विधि में शक्ति के अनुसार अल्पाहार या एकाशन करके भी व्रत किया जा सकता है। व्रत के दिन जिनेन्द्रदेव एवं श्रुतस्कंध यंत्र अथवा सरस्वती की मूर्ति का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें, पुनः सरस्वती के 108 नामों को पढ़ते हुए एक-एक मंत्रों का उच्चारण कर सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावलों को चढ़ावें। अनंतर समुच्चय मंत्र से एक जाप्य करें।

समुच्चय जाप्य – **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगाय नमः।**

ग्यारह अंग और चौदह पूर्वसंबंधी व्रतों में पृथक्-पृथक् एक-एक जाप्य करना चाहिए।

ग्यारह अंग की 11 जाप्य –

1. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आचारांगाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सूत्रकृतांगाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-स्थानांगाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-समवायांगाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-नाथधर्मकथांगाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उपासकाध्ययनांगाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अंतकृत्दशांगाय नमः।**

9. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अनुत्तरोपपादिकदशांगाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रश्नव्याकरणांगाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विपाकसूत्रांगाय नमः।**

चौदह पूर्वों की 14 जाप्य –

1. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उत्पादपूर्वाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अग्रायणीयपूर्वाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-वीर्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-ज्ञानप्रवादपूर्वाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सत्यप्रवादपूर्वाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आत्मप्रवादपूर्वाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कर्मप्रवादपूर्वाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रत्याख्यानपूर्वाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विद्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कल्याणप्रवादपूर्वाय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्राणावायप्रवादपूर्वाय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-क्रियाविशालपूर्वाय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-लोकबिंदुसारपूर्वाय नमः।**

इस व्रत के 25 उपवास एक वर्ष में करें। ऐसे एक वर्ष तक या बारह वर्ष[1] तक भी यह व्रत किया जाता है। व्रत पूर्ण करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस व्रत के प्रसाद से मनुष्य श्रुतज्ञान को प्राप्त कर अगले भव में श्रुतकेवली होकर परम्परा से केवलज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो जावेगा।

1. 'व्रत तिथि निर्णय' पृ. 214। 1. व्रत तिथि निर्णय, पृ. 216।